गांधीजीके पावन प्रसंग

१

लेखक

लल्लुभाई मकनजी

अनुवादक

सोमेश्वर पुरोहित

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद - १४

अनुक्रमणिका

प्रकाशकका निवेदन

१. बकरेकी मुक्ति

२. फूलसे भी कोमल

३. प्रेमकी मूर्ति गांधीजी

४. सेवाका हर काम पवित्र है

५. गांधीजीका बड़प्पन

६. मच्छरदानीका त्याग

७. डिब्बा खाली कराया

८. हाथमें कूंचा ही रह गया

९. गांधीजी – सत्यनिष्ठ वकील

१०. गाली देना भूल गया !

११. यह देह भगवानकी धरोहर है

१२. थूकदानी या सकोरा ?

१३. स्वच्छताका आग्रह

प्रकाशकका निवेदन

प्रौढ़-शिक्षणकी दृष्टिसे निकलनेवाले गुजरातीके पाक्षिक पत्र 'लोकजीवन' में समय-समय पर छपे हुए गांधीजीके जीवनके कुछ पावन प्रसंगोंकी यह छोटी-सी पुस्तिका हिन्दी पाठकोंके सामने रखते हुए हमें बड़ा आनन्द होता है | वैसे तो ये प्रसंग छोटे-बड़े, बालक-बूढ़े सभीके लिये समान रूपसे दिलचस्प और बोधप्रद हैं | परन्तु इनके पीछे खास हेतु उन प्रौढ़ विद्यार्थियोंके लिये पढ़नेका रोचक और प्रेरक साहित्य पेश करनेका है, जिन्होंने समाज-शिक्षणकी योजनाके मातहत लिखने-पढ़नेका ज्ञान प्राप्त किया है | इसलिये सारे प्रसंग थोड़े बड़े टाईपमें छापे गये हैं |

केंद्रीय सरकारने समाज-शिक्षणकी दृष्टिसे तैयार की जानेवाली लोक-साहित्यकी पुस्तकोंको प्रोत्साहन देनेकी जो योजना बनाई है, उसमें इस पुस्तकको यह हेतु सिद्ध करने योग्य माना है और इसके व्यापक उपयोगकी सिफारिश की है |

आशा है समाज-शिक्षणके क्षेत्रमें काम करनेवाले भाई-बहन इस पुस्तिकाका उपयोग करके समाजके प्रौढ़ जनोंको राष्ट्रपिता महात्मा गांधीके जीवनके इन ऊंचे उठानेवाले प्रसंगोंकी झांकी करायेंगे |

२-१०-१९५६

१

बकरेकी मुक्ति

उत्तरमें पर्वतराज हिमालयसे दक्षिणमें कन्याकुमारी तक फैला हुआ हमारा भारत एक विशाल और महान देश है | उसमें तरह तरहके लोग देखनेमें आते हैं | हिमालयकी गोदमें बैठ कर तपस्याका परम आनन्द अनुभव करनेवाले साधु-संतोंसे लेकर वहम, अंधविश्वास, अज्ञान और धर्ममें अंधी श्रद्धा रखनेवाले सब तरहके लोग इसमें बसते हैं | सच्चे धर्मपालनका तेज बहुत कम लोगोंके जीवनमें देखनेको मिलता है | लेकिन वहम और अंधविश्वाससे भूत-प्रेत और देवी-देवताओंकी पूजा करनेवाले अज्ञान और भोले-भले लोग इस देशमें सबसे ज्यादा हैं | कहीं कहीं पढ़े-लिखे लोग भी ऐसे वहमोंके भंवरमें फंसे हुए पाये जाते हैं | उनकी मान्यतायें और विश्वास ऐसे अजीब होते हैं कि विज्ञानके इस जमानेमें कार्य और कारणका सम्बन्ध जांचनेवालेके लिये उन्हें समझना कठिन हो जाता है | लोगोंके रहन-सहनकी गन्दी आदतोंके कारण फूट पड़ने और फैलनेवाले हैजा, चेचक और प्लेग जैसे रोगोंको वे माता या देवीके कोपका फल मानते हैं और उसे प्रसन्न करनेके लिये बकरों या मुर्गीका भोग चढ़ाते हैं |

एक दिन इसी तरह देवीको भोग चढ़ानेके लिये बिहारके चम्पारण जिलेके एक गांवसे होकर लोगोंका जुलूस देवीके थानककी तरफ जा रहा था | गांधीजी उस दिन उसी गांवमें ठहरे हुए थे | जुलूसके लोग बहुत शोरगुल मचा रहे थे | इसलिये सुननेवालोंको दूरसे ही पता चल जाता था कि लोंगोका बड़ा जुलूस आ रहा है | जुलूस जब गांधीजीके मुकामके पास होकर गुजरा तब उनका ध्यान उसकी तरफ गया | पास बैठे हुए एक साथी कार्यकर्तासे उन्होंने पूछा, "लोगोंने यह जुलूस क्यों निकाला है ? और वे इतना शोरगुल क्यों मचा रहे हैं ?"

जुलूसके बारेमें कार्यकर्ताको भी कुछ मालूम नहीं था, इसलिये वे गांधीजीको सन्तोष हो ऐसा जवाब नहीं दे सके | उत्सुकतासे गांधीजी बाहर निकले और सीधे जुलूसके पास पहुंच गये | जुलूसके आगे एक सुन्दर हट्टाकट्टा बकरा चला जा रहा था | उसके गलेमें फूलोंकी मालायें लटक रही थीं | माथे पर टीका लगा हुआ था | वह देवीका भोग था | कुछ ही समयमें उसके खूनसे देवीका खप्पर भरा जानेवाला था | इसलिये लोग भोग चढ़ानेके लिये बड़ी धूमधामसे उसे देवीके थानक पर ले जा रहे थे | यह सब देखकर वहम और अंधविश्वासमें डूबे हुए लोगोंका हूबहू चित्र गांधीजीके सामने खड़ा हो गया | उनका दिल करुणा और दयासे पसीज उठा | जुलूस तो शोर मचाता हुआ आगे बढ़ता ही जा रहा था | थोड़ी देरके लिये अपने कामका विचार छोड़कर गांधीजी भी जुलूसके साथ हो लिये और उस बकरेके साथ साथ चलने लगे ! लोग सब अपनी ही धुनमें मस्त थे, इसलिये किसीका भी ध्यान गांधीजीकी ओर नहीं गया!

जुलूस देवीके थानकके पास आ पहुंचा | बकरेके बलिदानकी विधि शुरु हो उसके पहले ही गांधीजी लोगोंके सामने आकर खड़े हो गये | कोई कोई ग्रामजन चम्पारणके आन्दोलनके नेताके रूपमें गांधीजीको पहचानते थे | उनके अचरजका पार न रहा | वे आपसमें बात करने लगे : 'अरे, गांधीजी हमारे दलमें कहांसे आ गये ! ये हमारे सामने खड़े पुरुष गांधीजी हैं | निलहे गोरोंके जुल्मोंसे हमें बचानेवाले, हमारे तारनहार !' सब लोग बिलकुल शान्त हो गये | तब गांधीजीने उनसे पूछा :

"इस बकरेको आप सब यहां क्यों लाये हैं ?"

लोग – देवीको भोग चढ़ानेके लिये |

गांधीजी – देवीको बकरेका भोग आप क्यों चढ़ाते हैं ?

लोग – देवीको प्रसन्न करनेके लिये |

गांधीजी – बकरेसे मनुष्य श्रेष्ठ है न ?

लोग – जी हां |

गांधीजी – तब यदि हम मनुष्यका भोग चढ़ायें, तो क्या देवी ज्यादा प्रसन्न नहीं होगी ?

गांधीजीके इस सवालसे लोग गहरे विचारमें पड़ गये | कोई कुछ बोला नहीं |

गांधीजी – यहां कोई ऐसा मनुष्य है, जो देवीको अपना भोग चढ़ानेको तैयार हो ? आपमें से कोई इसके लिये तैयार न हो, तो मैं अपना भोग चढ़ानेको तैयार हूं | लेकिन बकरेके भोगसे देवीको जो अधिक प्रिय हो उसीका भोग हम चढ़ायें |

लोग एक-दूसरेका मुंह ताकने लगे | गांधीजीको क्या जवाब दिया जाय, यह किसीकी समझमें नहीं आ रहा था | सब परेशान थे |

ऐसे कामके लिये अपना दुःख प्रगत करते हुए गांधीजीने कहा – गूंगे और निर्दोष प्राणीके खूनसे क्या देवी प्रसन्न होती है ? अगर यह बात सच हो तो मनुष्यका खून ज्यादा कीमती है | वही देवीको अर्पण कीजिये | परन्तु ऐसा तो कोई मनुष्य करता नहीं | किसी निर्दोष प्राणीकी बलि चढ़ाना पुण्य नहीं, पाप है, अधर्म है |

"तो आप हमें बताइए कि धर्म क्या है |" कुछ लोग बीचमें बोल उठे |

गांधीजी – सच बोलिये | सारे प्राणियोंसे प्रेम कीजिये | सब जीवोंको आत्मवत्, अपने समान समझिये | इस बकरेको छोड़ दीजिये | इसकी मुक्तिसे देवी आज जितनी प्रसन्न होगी, उतनी पहले कभी न हुई होगी |

लोग प्रेमका अमर सन्देश सुन रहे थे | उसका सब पर जादूका-सा असर हुआ | लोगोंने बकरेको छोड़ दिया और देवीको भोग चढ़ाये बिना ही वहांसे लौट गये |

भगवान बुद्धके हजारों वर्ष पहलेके जीवन-प्रसंगकी याद दिलानेवाला यह एक छोटा लेकिन बड़े महत्त्वका प्रसंग था | उसने गांवकी भोली-भाली जनताके जीवनमें प्रेमकी ज्योति जगा दी |

ऐसे थे दया और प्रेमके सागर हमारे गांधीजी |

२

फूलसे भी कोमल

सन् १९३० के दिन थे | दांडीकूचसे दो-एक महीने पहले साबरमती आश्रममें चेचकका रोग फूट पड़ा था | सब आश्रमवासी अच्छी तरह जानते थे कि गांधीजी चेचकका टीका लगवानेके खिलाफ हैं | इसलिये आश्रममें रहनेवाले माता-पिताओंने अपने बच्चोंको चेचकका टीका नहीं लगवाया था | आश्रमके कुछ बच्चे चेचकके शिकार हो गये थे | गांधीजीने अपनी दृष्टिसे पूरी पूरी सावधानी बरती और बीमारोंकी सार-संभालमें कोई कसर न रखी थी | डाक्टरोंने भी इस सम्बन्धमें उनके उपायोंको ठीक बताया था | फिर भी एकके बाद एक तीन बच्चे इस रोगसे चल बसे और बाकीके अच्छे हो गये |

सबसे पहले एक ९ वर्षकी लड़कीकी मृत्यु हुई | इससे गांधीजीके दिलको भारी सदमा पहुंचा | रातमें उन्हें नींद नहीं आयी | आधी रातको वे जाग उठे और अपने बिस्तरमें बैठ कर कुछ लिखने लगे | पासमें लालटेन जल रही थी |

उसी समय एक आश्रमवासी बहन भी जाग ऊठीं | आधी रातमें गांधीजीको लिखते देख कर उन्हें बड़ा अचरज हुआ | वे गांधीजीके पास जाकर बोलीं : "बापू, इस वक्त क्यों लिख रहे हैं ? क्या कोई जरूरी काम आ गया है ? मेरे लायक कोई काम हो तो बताईये | मैं मदद करनेको तैयार हूं |"

गांधीजी (उन बहनकी ओर देखे बिना ही) : नहीं, नहीं, तुम आरामसे सो जाओ | मैं अपना काम पूरा कर लूंगा |"

इसके थोड़े दिन बाद आश्रममें शामकी प्रार्थना चल रही थी तब दूसरा बच्चा मर गया | उस रात भी गांधीजी सो न सके | पहलेके तरह आधी रातको उठ बैठे और कुछ लिखने लगे |

एक-दो दिन बाद तीसरा बच्चा भगवानके घर चला गया | एकके बाद एक होनेवाली बच्चोंकी मौतसे गांधीजी चिन्तामें डूब गये | उस दिन भी गांधीजी आधी रातको उठ कर लिखने बैठ गये | वे आश्रमवासी बहन गांधीजीके जागरण और दुःखसे परिचित थीं | उनसे रहा न गया, इसलिये वे भी आधी रातको गांधीजीके सामने जाकर खड़ी हो गयीं | उन्होंने धीरेसे गांधीजीसे पूछा :

"बापू, आपको क्या होता है ? हर बच्चेकी मौत होने पर आप आधी रातको जाग कर लिखनेमें लीन हो जाते हैं |"

गांधीजी गहरी आह भरकर बोले : "दूसरा तो मैं क्या कर सकता हूं ? मैं सो नहीं सकता | फूलकी कोमल कलियों जैसे सुकुमार बच्चे असमयमें मौतके शिकार होते जाते हैं | मैं उनकी मौतको चुपचाप देखता रहता हूं; उन्हें बचा नहीं सकता | उनकी मौतका बोझ अब मेरे दिमाग पर पड़ने लगा है | चेचकका टीका न लगवानेकी मेरी सलाह उनके मां-बापोंने मानी और उन्हें टीका नहीं लगवाया | लेकिन अब एकके बाद एक बालक इस तरह जा रहा है | यह सोचकर मैं बेचैन हो रहा हूं कि यह कहीं मेरे अज्ञान और झक्कीपनका नतीजा तो नहीं है |"

आश्रमवासी बहन : "ये शब्द क्या मैं महात्माके मुंहसे सुन रही हूं ? आपने रोगका ठीक निदान किया है और उससे बच्चोंकी रक्षा करनेके लिये आप उचित इलाज कर रहे हैं | फिर चिन्ता किस बातकी ? इस पर भी मौत अगर आने ही वाली हो, तो इस दुनियामें उसे कौन रोक सकता है ? मृत्यु मनुष्य-जातिका सनातन मित्र है | मित्रके जैसे प्रेमसे मृत्युको भेंटनेकी सलाह देनेवाले आप आज इतने दुःखी और आसक्त क्यों हो रहे हैं ? यह आचरण आप जैसे महात्माको शोभा नहीं देता | आपका दिल इतना कमजोर कैसे बन गया है ?"

गांधीजी : "हां, मैं अपनी कमजोरी कबूल करता हूं |" इतना कहकर वे कुछ देर चुप रहे |

दुःख और उदासीसे भरी हुई आंखोंसे इधर-उधर देखकर फिर कहने लगे :

"लोग मुझे महात्मा कहते हैं | लेकिन महात्माके पास भी दिल होता है | मनुष्य चाहे जितना बहादुर और अनासक्त हो, फिर भी क्या उसका दिल कोमल नहीं हो सकता ?"

वे बहन कुछ बोल न सकीं | फूलसे भी कोमल हृदयवाले महात्माके वचन वे सुन रही थीं |

दूसरे दिन आश्रमवासियोंके सामने अपना दुःख और वेदना प्रगट करके गांधीजीने मनका बोझ हलका किया | अपने विचारोंको स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया : "मेरी अपनी तो चेचकका टीका लगवानेमें जरा भी श्रद्धा नहीं है | इसके कारण मौत भी आ जाय, तो उसे भेंटनेके लिये मैं तैयार हूं | लेकिन मेरी अपनी राय अब मैं आश्रमवासियों पर लादना नहीं चाहता | जो माता-पिता अपने बच्चोंको टीका लगवाना चाहें वे लगवा सकते हैं |"

परन्तु किसी आश्रमवासीने इस छूटका लाभ नहीं उठाया | ऐसी थी वह प्रेमकी लोकशाही | और उसके बाद ईश्वरने भी किसीकी परीक्षा नहीं की | फिर कभी आश्रममें इस रोगसे किसी बालककी मौत नहीं हुई |

३
प्रेमकी मूर्ति गांधीजी

भारतके लोगोंको चिरकाल तक याद रहनेवाले मशहूर दांडीकूचके दिनोंकी बात है | नमक-करका अन्याय दूर करानेके लिये गांधीजीने सत्याग्रह करनेका निश्चय किया था | इसके लिये उन्होंने सूरत जिलेके समुद्र किनारेका दांडी गांव पसन्द किया था | वहां पहुंचनेके लिये गांधीजी साबरमती आश्रमसे अपने सैनिकोंके साथ पैदल यात्रा कर रहे थे | ६१ बरसकी उमरमें भी नौजवानोंको थकानेवाली चालसे वे चलते थे | उनकी चालमें गजबकी तेजी और दृढ़ता थी | स्वयंसेवक उनके साथ चलते-चलते थक जाते थे | कूचके कार्यक्रमके अनुसार तय किये गये मीलोंकी यात्रा पूरी करके ही रातको किसी गांवमें गांधीजी पड़ाव डालते थे | ऐसे एक पड़ाव पर वे रातको पहुंचे | वहां हजारों लोग अधीर बनकर उनकी राह देखते बैठे थे | गांधीजीको देखकर उनके आनन्दका पार न रहा | 'गांधीजीकी जय' के नारोंसे सारा वातावरण गूंज उठा | उस दिन गांधीजी कुछ ज्यादा थक गये थे | फिर भी उन्होंने सभाका कार्यक्रम पूरा किया | सत्याग्रहका सन्देश सुन कर लोग बिखर गये | वातावरण शान्त होने लगा | प्रार्थना करके गांधीजी खुले आकाशके छत्रके नीचे लेट गये और तुरन्त गहरी नींदमें सो गये | थके-थकाये सैनिक भी धीरे-धीरे सो गये | रातकी मौन शान्ति चारों ओर फैली हुई थी | मंद मंद हवा बह रही थी | चन्द्रमाकी दूध-सी चांदनीमें धरती नहा रही थी | गांधीजीके बिस्तरके पास एक लालटेन धीमे प्रकाशसे जल रही थी, मानो उनकी रखवाली करनेके लिये जाग रही हो |

रातके कोई दो बजे होंगे | गांधीजी एकाएक जाग उठे | कामका बहुत बोझ था | इसलिये लालटेनकी बत्ती थोड़ी ऊंची करके वे लिखने लगे | लेकिन उसका तेल चुक गया और वह बूझ गयी | चन्द्रमाके शान्त प्रकाशमें उन्होंने लिखना जारी रखा | सैनिक गहरी नींदमें सो रहे थे | लेकिन उनमें से एक सैनिक जाग उठा | उसने देखा कि गांधीजी चन्द्रमाके प्रकाशमें बैठे लिख रहे हैं | उसने पास आकर गांधीजीसे पूछा : "बापू, इतने प्रकाशमें आप लिख सकते हैं ?"

गांधीजी (हंसकर) – हां, लिख तो सकता हूं, लेकिन लिखा हुआ पढ़ नहीं सकता |

"हममें से किसीको जगाया क्यों नहीं ? वह लालटेन जला लाता |"

गांधीजी – सारे स्वयंसेवक थककर चूर हो गये हैं और गहरी नींदमें सो रहे हैं | भला मैं किसे जगाता? और फिर इतने प्रकाशमें लिख तो सकता ही हूं |

ऐसा थी स्वयंसेवकों पर गांधीजीका प्रेम और ममता | मां जिस तरह अपने सोते हुए बालककी नींदमें बाधा न पहुंचानेके विचारसे खुद थोड़ी अड़चन और मुसीबत सह लेती है, उसी तरह प्रेममूर्ति गांधीजी भी अपने सैनिकोंके आराममें खलल न डालनेके खयालसे ऐसी अड़चनें और मुसीबतें सहन कर लेते थे |

४

सेवाका हर काम पवित्र है

दक्षिण अफ्रीकासे भारत लौटने पर गांधीजीने कोचरब गांवमें सत्याग्रह आश्रम कायम किया और वहां अपने साथियोंके साथ रहने लगे | बादमें आश्रमको साबरमतीके किनारे आजकी सत्याग्रह आश्रमकी जमीन पर हटाया गया | भारतमें उनका नाम दक्षिण अफ्रीकामें सत्याग्रहको जन्म देनेवाले तथा उसमें सफलताके साथ विजय प्राप्त करनेवाले नेताके रूपमें फैला हुआ था | इसलिये साबरमतीके तीर पर बैठ कर वह यशस्वी पुरुष किस चीजकी साधना करता है, यह जाननेकी उत्सुकतासे भी समय समय पर बहुतसे मुलाकाती आश्रममें आया करते थे | गांधीजी भी समय निकालकर वकीलोंकी गुजरात क्लब जैसी संस्थामें जाते थे, आश्रमके जरिये वे भविष्यमें क्या करना चाहते हैं यह बात वकील मंडलको समझाते थे और आश्रममें आकर वहां चल रहे कामोंको देखनेका आमंत्रण भी उन्हें देते थे |

गांधीजी इस पर खास जोर देते थे कि आश्रमवासियोंको सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (संग्रह न करना), ब्रह्मचर्य वगैरा ग्यारह व्रतोंका लगन और निष्ठासे पालन करना चाहिये | इन ग्यारह व्रतोंको जीवनकी साधनाका केन्द्र समझकर आश्रमवासी अपने सारे काम करते थे | आश्रममें नौकर-चाकरके लिये कोई स्थान नहीं था, इसलिये शरीर-श्रमके सारे काम आश्रमवासी अपने हाथोंसे ही करते थे | फिर वह काम रसोईघरका हो या पाखाना-सफाईका हो, दोनोंमें कोई भेद नहीं माना जाता था |

उन दिनों विनोबाजी भी आश्रममें रहते थे | गांधीजी, विनोबाजी और महादेवभाई जैसे महापुरुष भी आटा पीसने या अनाज साफ करनेका काम प्रसन्न मनसे करते थे | इन सबके चक्की पीसने या रसोईघरमें बैठकर अनाज साफ करनेका दृश्य कितना सुन्दर, प्रेरणा देनेवाला और जीवनके मूल्योंको बदलनेवाला रहा होगा !

गांधीजी मुलाकातियों या मेहमानोंसे भी ऐसे काम करनेके लिये कहते थे | एक बार गुजरातके प्रसिद्ध विद्वान श्री आनन्दशंकर ध्रुव गांधीजीसे मिलनेके लिये आये | गांधीजी उस वक्त चक्की पर बैठकर अनाज पीस रहे थे |

उन्हें देखकर गांधीजी बोले : "पधारिये ! पधारिये !"

फिर पलभर चक्कीको रोक कर श्री ध्रुवसे विनती करते हुए बोले, "आपको कोई आपत्ति न हो तो आप भी पीसने बैठ जाईये | हम अनाज पीसते-पीसते बातें करेंगे |"

सन्तकी विनती स्वीकार करके श्री ध्रुव तुरन्त बैठ गये और चक्की पीसनेमें गांधीजीको मदद करने लगे | पीसते-पीसते बातचीत पूरी हो जानेके बाद ध्रुवसाहब बिदा हुए |

एक दिन रसोईघरमें अनाज साफ करनेका समय था | गांधीजी, विनोबा वगैरा सब अनाज साफ कर रहे थे | उसी समय कोट-पतलूनसे सजे-धजे एक वकील साहब गांधीजीसे मिलने आये |

उनके लिये चटाईका आसन जमीन पर बिछा कर गांधीजी बोले – "बैठिये |"

वकील (खड़े-खड़े) – "गांधीजी, मैं यहां बैठनेके लिये नहीं आया हूं | मुझे कोई काम चाहिये | आप मेरे लायक कोई काम मुझे सौंपेंगे, इसी आशासे मैं आश्रममें आया हूं |"

"बड़े आनन्दकी बात है," कहकर गांधीजीने दो-तीन थाली अनाज साफ करनेके लिये वकील साहबके सामने रख दिया | और जोड़ा, "अनाज इस तरह साफ कीजिये कि उसमें एक भी कंकर न रहे|"

अपने सामने अनाजकी ढेरी देख कर वकील साहब बड़े विचारमें पड़ गये | अनाजकी सफाई तो नौकरोंका या घरकी स्त्रियोंका काम है ! वकील जैसे बुद्धिमान आदमीसे गांधीजी ऐसा हलका काम लेते हैं, यह कैसी अजीब बात है ? इस तरह मनमें थोड़ा असन्तोष मानते हुए बोले : अनाज सफाईका काम मुझे करना होगा ?"

गांधीजी : "हां, अभी तो मेरे पास यही काम है |"

अब क्या किया जाय ? वकील साहब परेशानीमें पड़ गये | उन्होंने सोचा था कि गांधीजी कुरसी-टेबल पर बैठ कर लिखनेका या ऐसा ही कोई दूसरा दिमागका काम उन्हें देंगे | लेकिन गांधीजीने तो रसोईघरमें काम करनेवाली बहनोंका हलका काम उन्हें सोंपा, जिसकी उनकी निगाहमें कोई कीमत नहीं थी | लेकिन गांधीजीसे ना कहनेकी भी उनमें हिम्मत नहीं थी | आखिर वे अनाज साफ करने बैठे | काम पूरा हो जाने पर उन्हेंने गांधीजीसे बिदा ली | परंतु फिर कभी गांधीजीसे 'मेरे लायक काम' की मांग नहीं की !

गांधीजीके जीवनमें छोटे और बड़े कामका कोई फर्क नहीं था | वे जीवनके लिये उपयोगी सारे कामोंकी एकसी कीमत करते थे | वाईसरॉयके साथ राजनीतिक मंत्रणा करने, सत्याग्रह आन्दोलनका संचालन करने, कार्यकर्ताओंकी रहनुमाई करने या 'हरिजन' पत्रोंके लिये लेख लिखनेको वे जितना महत्त्व देते थे, उतना ही महत्त्व बीमारोंकी सेवा, अनाज-सफाई या पाखाना-सफाईको भी देते थे | उन्होंने ऐसा कभी नहीं माना कि पीसना, अनाज साफ करना, रसोई बनाना, पानी भरना या बीमारोंकी सेवा करना स्त्रियोंके हलके काम हैं | वे मानते थे कि सेवाका हर काम पवित्र है और इसलिये एकसा महत्त्व रखता है | जीवनमें अपने हिस्से छोटा या बड़ा जो भी काम आये, उसे मन लगाकर जिम्मेदारी और कुशलताके साथ भलीभांति पूरा करनेमें ही जीवनकी सफलताकी कुंजी है | हम यह न भूलें कि गांधीजीकी महत्ता और महिमाको बढ़ानेमें ऐसे छोटे-छोटे कामोंका बहुत बड़ा हाथ था |

५

गांधीजीका बड़प्पन

गांधी-सेवा-संघका वार्षिक सम्मेलन जब जब भी होता था, तब लगभग एक हफ्ते तक उसका कामकाज चलता था | रचनात्मक कार्यमें जीती-जागती श्रद्धा रखनेवाले संघके सदस्य अपने रोजके कामकाजमें खड़ी होने-वाली कठिनाईयां सम्मेलनमें पेश करते थे और सत्य तथा अहिंसाको ध्यानमें रखकर सिद्धान्त और व्यवहारकी दृष्टिसे उनकी चर्चा करते थे | गांधीजी खुद चर्चामें हाजिर रहते थे और सबको रास्ता बताते थे | एक-दूसरेके अनुभवोंको सुनने-सुनानेसे भी कार्यकर्ताओंको कीमती खुराक मिलती थी | इस तरह संघके वार्षिक सम्मेलनमें रचनात्मक कार्यकर्ताओंको पूरे वर्षके लिये जरूरी मार्गदर्शन और प्रेरणा प्राप्त होती थी |

एक बार गांधी-सेवा-संघका वार्षिक सम्मेलन कर्नाटकके हुदली गांवमें हुआ | सम्मेलनका स्थान गांवके बाहर एक सुन्दर जगहमें चुना गया था | आसपास हरेभरे कुदरती शोभावाले पहाड़ खड़े थे | उनकी तलहटीमें सम्मेलनमें आनेवाले सदस्योंके लिये मंडप बनाये गये थे | गर्मीका मौसम था इसलिये सब सदस्य मौसमके हिसाबसे ही कपड़े, बिस्तर वगैरा लाये थे | बरसातकी तो किसीको कल्पना भी नहीं थी | परन्तु न जाने कहांसे एकाएक आकाशमें बादल घिर आये और मूसलधार पानी बरसने लगा | सम्मेलनकी सारी व्यवस्था बिगड़ गई | मंडपोंमें पानी ही पानी हो गया | बारिशमें सदस्योंके सारे कपड़े, बिस्तर वगैरा भीग गये | किसीको सूझ नहीं पड़ता था कि क्या किया जाय | ऐसी हालतमें उस समयके लिये तो सम्मेलनकी करवाई रोक दी गई |

गांधीजी, सरदार पटेल, राजेन्द्रबाबू, खान अब्दुलगफ्फार खान, गंगाधरराव देशपांडे और किशोरलाल मशरूवाला खड़े-खड़े चर्चा कर रहे थे | इतनेमें गांवसे कोई आदमी छत्री लेकर आया | गंगाधरराव देशपांडेने छत्री खोलकर गांधीजीके सिर पर रखी | सम्मेलनमें इस प्रस्ताव पर विचार हो रहा था कि हो सके तो सब सदस्योंको गांवमें ले जाया जाय और लोगोंके घरोंमें उनके सोनेका इन्तजाम किया जाय | मंडपोंमें रात नहीं बिताई जा सकती थी | यह डर भी था कि अधिक जोरसे बारिश हुई तो कठिनाईयां और बढ़ जायेंगी | अंतमें सारे सदस्योंको गांवमें ले जानेका निश्चय किया गया | इसका इन्तजाम करनेके लिये देशपांडेजीने स्थानीय कार्यकर्ताओंको गांवमें भेजा और गांधीजीसे कहा: "चलिये बापू, आपका इन्तजाम तो हो गया है | पहले आप इस बरसातसे बाहर निकलिये | दूसरे सब लोगोंकी व्यवस्था भी मैं धीरे-धीरे गांवमें कर देता हूं |" नेताओंको भी यह बात पसन्द आयी | इसलिये सरदार पटेलने कहा : "बिलकुल ठीक है | बापूको पहले ले जाईये | हम सब बादमें जायंगे |"

परन्तु गांधीजीने वहांसे अकेले हटनेसे गंगाधररावको साफ इनकार कर दिया : “मैं नहीं आऊंगा | पहले आप इन सबकी व्यवस्था कर दीजिये, फिर आखिरमें मुझे ले जाईये |”

रात हुई | दिये जले | सब सदस्योंको गांवमें ले जानेका काम शुरु हुआ | काफी रात बीतने पर हमारी व्यवस्था भी हुई और हम भी एक घरमें जाकर सोये | सवेरे जल्दी तैयार होकर सम्मेलनके कार्यक्रमके बारेमें पूछताछ करनेके लिये श्री गंगाधरराव देशपांडेके घर पहुंचे | सरदार, राजेन्द्रबाबू वगैरा नेताओंको वहां देखा, परन्तु गांधीजी नहीं दिखाई दिये ! वे गांवमें नहीं आये थे | छावनीमें ही उन्होंने सारी रात बिताई थी | वहां कुछ टीन डाल कर उनकी खटियाका बचाव किया गया था | बा, मणिबहन वगैरा गांधीजीके साथ रहीं और उनकी खटियाके पास ही जमीन पर सोईं | सवेरे जल्दी उठकर गांधीजी कीचड़में चल कर कुमरी आश्रम गये और वहीँ सम्मेलनका कार्य शुरू करनेका तय किया | नेता और सदस्य सब वहां पहुंचे और वहीं सम्मेलनका कार्य पूरा किया गया |

सम्मेलनमें अनेक महत्त्वके सवालोंकी चर्चा हुई थी | परन्तु मेरे मनमें गांधीजीका यह वाक्य आज भी गूंज रहा है : “पहले आप इन सबकी व्यवस्था कर दीजिये, फिर आखिरमें मुझे ले जाईये |” अपनी सुख-सुविधाका विचार सबसे आखिरमें करनेवाले गांधीजीके बड़प्पनकी कल्पना ऐसी छोटी-छोटी घटनाओंसे ही हमें आती है |

६

मच्छरदानीका त्याग

शरद ऋतुके बाद साबरमती आश्रममें हमेशा मलेरियाका उपद्रव बढ़ जाता था | मच्छर इतना तंग करते थे कि कुछ लोग तो रातमें अच्छी तरह सो भी नहीं सकते थे | इससे किसीने गांधीजीके सामने मच्छरोंकी शिकायत की | यह सवाल सिर्फ आश्रमका ही नहीं था | गांधीजी जानते थे कि भारतके कुछ हिस्सोंमें बारहों महीने मलेरियाका रोग बना रहता है | हजारों गरीब उसके शिकार होकर मौतकी शरणमें चले जाते हैं | इसलिये गांधीजी विचार करने लगे कि मलेरियाको मिटानेके लिये क्या उपाय किये जाये|

एक दिन उन्होंने कुछ डाक्टर मित्रोंको बुलाकर मलेरियाको खतम करनेकी समस्या उनके सामने रखी |

उस समय मच्छरोंका नाश करनेवाली डी.डी.टी. जैसी जन्तु-नाशक दवाईकी खोज नहीं हुई थी | मलेरियाके रोगियोंको डाक्टर कुनैन देकर अच्छा करते थे | परन्तु किसीको ऐसे उपायका पता नहीं था जिससे मलेरिया हो ही नहीं | इसलिये मच्छरोंके त्रासको मिटानेके खयालसे एक डाक्टर बोले :

“मलेरियासे बचनेके लिये लोगोंको मच्छरदानी काममें लेनी चाहिये |”

समस्याका यह हल सुनकर गांधीजी थोड़े विचारमें पड़ गये | डाक्टरका सुझाव उन्हें जंचा नहीं | वे कोई ऐसा उपाय जाननेके लिये आतुर थे, जो देशके लाखों गरीबोंको पुसा सके | अपना असन्तोष जाहिर करते हुए वे बोले :

“मच्छरदानीका उपाय तो मुझे मालूम है | परन्तु इस गरीब देशमें ऐसे कितने लोग हैं, जो मच्छरदानी काममें ले सकते हैं ? जहां लाखों आदमियोंको दो जून पेटभर खाना भी नहीं मिलता और ठंड-धूपसे बचनेके लिये काफी कपड़े मयस्सर नहीं होते, वहां लोगोंको मच्छरदानी काममें लेनेकी सलाह देनेका मुझे क्या अधिकार है ? मुझे तो कोई ऐसा उपाय बताईये, जिससे देशके लाखों गरीब लाभ उठा सकें |”

गांधीजीके ये वचन सुनकर डाक्टर परेशानीमें पड़ गये | क्षणभरके लिये किसीके मुंहसे कोई शब्द नहीं निकला | अन्तमें एक डाक्टर बोले :

“बापू, गरीबोंको पुसा सके ऐसा एक उपाय मुझे सूझता है |”

गांधीजी – तो कहिये |

डाक्टर – सोते समय शरीर पर चद्दर लपेट लें और मुंह पर मिट्टीका तेल लगा लें तो मच्छर नहीं काटेंगे |

गांधीजी (हंसकर) – ठीक है | परन्तु यह प्रयोग पहले मुझे खुद अपने पर करना होगा | बादमें लोगोंको इसकी सलाह दे सकता हूं |

इन दिनों गांधीजी रातको मच्छरदानीमें सोया करते थे | परन्तु डाक्टरकी सूचनाके बाद उन्होंने मच्छरदानी छोड़ दी और रातको मुंह पर मिट्टीका तेल लगा कर सोना शुरु किया | साथियोंको गांधीजीका यह कदम पसन्द नहीं आया, परन्तु उनके अडिग निश्चयके सामने किसीकी एक न चली |

गांधीजीने जीवन भर यह आग्रह रखा था कि 'जो चीज गरीबोंको नहीं मिल सकती, उसका मेरे जीवनमें कोई स्थान नहीं है |' उन्होंने आसानीसे मिल सकनेवाली चीजोंका अपनी मरजीसे खुशी-खुशी त्याग करके गरीबीके आदर्शको जीवनमें सिद्ध कर दिखाया था | इस आदर्शके पालनमें उनकी श्रद्धाकी कसौटी करनेवाले मच्छरदानीके त्याग जैसे छोटे-छोटे प्रसंग जीवनमें आते, तब गांधीजी उन्हें हाथसे जाने नहीं देते थे; ऐसे मौकों पर वे अपने आदर्श पर अमल करनेमें कभी चूकते नहीं थे | गांधीजीके मनमें देशके करोड़ों गरीबोंकी उन्नति और कल्याणका तो चिन्तन हमेशा चला करता था, उसीमें से उन्हें ऐसी चीजोंके त्यागकी बात सूझती थी | यही कारण है कि उनका त्याग और उनकी तपस्या आम जनता पर इतना असर डाल सकी और अनेक कार्यकर्ताओंको गरीबीका व्रत लेनेकी प्रेरणा दे सकी |

७

डिब्बा खाली कराया

गांधीजी सदा रेलके तीसरे दरजेमें ही यात्रा करते था | आम जनताको रेलकी यात्रामें जो सहूलियतें मिल सकती हैं, उनसे ज्यादा सहूलियतें भोगना उन्हें पसन्द नहीं था | कभी-कभी साथी उनके स्वास्थ्यका खयाल करके तीसरे दरजेमें अधिक व्यवस्था करते, तो वह भी उन्हें अच्छा नहीं लगता था |

सन् १९४५ में वे बंगालकी यात्रा करनेवाले थे | यात्रा लम्बी थी इसलिये गांधीजी और उनकी मंडलीके लोगोंको आराम मिले, इस खयालसे तीसरे दरजेके दो डिब्बे रिजर्व करा लिये गये थे | गाड़ीमें बैठनेके बाद गांधीजीने देखा कि दो डिब्बे तो जरूरतसे ज्यादा माने जायंगे | एकमें ही सुविधासे सबकी व्यवस्था हो सकती है | गाड़ी तेज दौड़ रही थी | खुद किसी काममें लगें या आराम करनेके लिये सोयें, इसके पहले ही एक साथीको बुलाकर गांधीजीने कहा : "हमें मौका मिलते ही एक डिब्बा खाली कर देना चाहिये |"

साथी : बापू, दोनों हमारे ही लिये रिजर्व कराये गये हैं और उनके पैसे भी भर दिए गये हैं |"

गांधीजी : "लेकिन उससे क्या ? हम बंगालमें गरीब और भूखसे तड़पते लोगोंकी सेवा करने जा रहे हैं | गाड़ीमें ऐसी सुविधा भोगना हमें शोभा नहीं देता | तुम देखते नहीं कि दूसरे डिब्बोंमें लोग दम घुटनेवाली भीड़में मुसाफिरी कर रहे हैं ? ऐसी हालतमें जरूरतसे थोड़ी भी ज्यादा जगह रोकनेका हमें कोई अधिकार नहीं है | आजके जमानेमें इतनी सुविधायें भोगते हुए यह कहना निर्दय मजाक होगा कि हम तीसरे दरजेमें मुसाफिरी करते हैं |"

गांधीजीकी यह दलील सुनकर मंडलीके लोगोंमें से कोई कुछ बोल नहीं सका | गरीबोंकी सुख-सुविधाका विचार किये बिना एक क्षण भी गांधीजी रह नहीं सकते थे | अपरिग्रह व्रतका पालन गांधीजी जीवनमें किस हद तक करते हैं, इसकी एक नई ही झांकी साथियोंको इसमें मिली |

दूसरा डिब्बा खाली कर दिया गया, जिससे दूसरे मुसाफिरोंको उसका लाभ मिले | एक डिब्बेमें ही सारा सामान जमा दिया गया और उसीमें मंडलीके सब लोग बैठ गये |

इस तरहकी व्यवस्था हो जानेके बाद गांधीजी चलती गाड़ीमें गहरी नींदमें सो गये |

८

हाथमें कूंचा ही रह गया !

भारत जैसे बड़ी आबादीवाले देशमें प्रजाकी गरीबी और बेकारी दूर करनेके लिये गांधीजीने चरखे और ग्रामोद्योगोंकी हिमायत की थी | ग्रामोद्योगोंका काम सारे देशमें चले, इसके लिये उन्होंने अखिल भारत ग्रामोद्योग संघकी स्थापना की थी और कार्यकर्ताओंको रास्ता दिखानेके लिये संघके बड़े केन्द्र मगनवाड़ी (वर्धा) में रहने चले गये थे |

मगनवाड़ीमें रोजके कुछ काम आश्रमके ढंग पर ही चलते थे | वहांके नियम जान लेनेके बाद गांधीजीने अपना रोजका कार्यक्रम उन्हींके अनुसार बना लिया था | उन दिनों मगनवाड़ीमें एक नियम ऐसा था, जिसके अनुसार हर आदमीको वहांके कुछ कामोंमें भाग लेना पड़ता था | खुद गांधीजी पर भी वह नियम लागू होता था | एक दिन गांधीजीके हिस्सेमें रसोईघरके बरतन साफ करनेका काम आया | शरीर-श्रमके हर काममें उनकी दिलचस्पी थी | इसलिये नियत समय पर वे रसोईघरमें बरतन मांजने आ पहुंचे | उस दिन श्री जे. सी. कुमारप्पा इस काममें गांधीजीके साथी थे | दोनों बरतन उठा कर कुएंके पास ले गये | अपने पास राख और मिट्टीका ढेर रखकर और हाथमें नारियलका कूंचा लेकर दोनों बरतन मांजने लगे |

गांधीजीके कमरेमें उन्हें न पाकर कस्तूरबा सोचने लगीं : "बापू कहां गये होंगे ?" किसीसे पूछ कर उन्होंने बापूके बारेमें जान लिया | इसलिये वे तुरन्त कुएंके तरफ चल दीं |

श्री कुमारप्पाने दूरसे बाको कुएंकी तरफ आते देखा | गांधीजी बरतन मांजने गये हैं, यह सुनकर वे अकुला उठी थीं | बाको इस बातकी बड़ी चिन्ता रहती थी कि इस उमरमें शक्तिसे अधिक मेहनत करनेसे गांधीजीकी तबीयत खराब न हो जाय | कुछ बातोंमें गांधीजीका आग्रह बाको पसन्द नहीं था | पास आकर वे कुछ मिनट तक एकटक गांधीजीकी तरफ देखती रहीं | उनकी आंखोंमें रोष और उलाहनेका भाव था | लेकिन गांधीजी अपने काममें इतने मशगूल थे कि आंख ऊंची करके उन्होंने बाकी ओर देखा तक नहीं ! बा यह दृश्य सहन न कर सकीं | गुस्सेमें गांधीजीको उलाहना देते हुए बोलीं : "क्या आपको इसके सिवा दूसरा कोई धन्धा नहीं है ? अनेक महत्त्वके काम आपके पास पड़े हैं, जाकर उन्हें कीजिये न | यह काम करनेके लिये तो दूसरे कई लोग हैं |"

बाके उलाहनेसे आनन्द अनुभव करते हुए गांधीजी मुस्कराते-मुस्कराते बरतन मांजते रहे | अब तो बाके धीरजका अन्त आ गया | "अब आप उठेंगे या नहीं यहांसे ?" कह कर बाने गांधीजीके हाथसे

बरतन छीन लिया | गांधीजीके हाथमें सिर्फ नारियलका कूंचा रह गया | बाकी बरतन छीन लेनेकी चपलतासे मानो झेंप गये हों, इस तरह एक हाथ मिट्टी और राखसे सना हुआ और दूसरे हाथमें नारियलका कूंचा पकड़े हुए गांधीजी कुमारप्पाकी ओर देखकर बोले :

"कुमारप्पा ! तुम बड़े सुखी आदमी हो | क्योंकि तुम पर इस तरह राज करनेवाली तुम्हारी पत्नी नहीं है | लेकिन मुझे तो अपने घरकी शांति बनाये रखनेके लिये बाकी आज्ञा पालनी ही होगी | इसलिये तुम्हारे काममें मदद करनेके लिये बाको तुम्हारे पास छोड़ जाऊं तो मुझे माफ कर देना |"

जो बातें जीवनकी साधनामें बाधा डालनेवाली न होतीं, उनमें 'बाको बुरा लग जायगा', 'बा कहीं उलाहना न दे' इस तरह बाकी भावनाका विचार करके गांधीजी अपना आग्रह छोड़ देते थे | इसलिये बाकी भावनाके वश होकर गांधीजी हाथ-पांव धोकर अपने कमरेकी ओर चले गये | उसके बाद बाने कुमारप्पाको मदद देकर बरतन मांजनेका काम पूरा किया |

वहांसे निबट कर बा सीधी गांधीजीके कमरेमें गईं और एक शब्द भी बोले बिना चुपचाप खड़ी रहीं| उनका दिल कह रहा था –'जब तक में जिन्दी बैठी हूं, तब तक आपको ऐसा काम नहीं करने दूंगी |' परन्तु उनकी प्रेम बरसाती आंखें उलाहना दे रही थीं –'फिर कभी ऐसा करेंगे ?' ब्रिटिश साम्राज्य जैसी बड़ी सल्तनतको झुकानेवाले संसारके महापुरुषको उलाहना देनेका अधिकार बा जैसी आर्य महिलाने प्राप्त किया, उसकी जड़में उनकी यह सेवा और अनन्य पतिभक्ति ही थी |

९

गांधीजी – सत्यनिष्ठ वकील

आम तौर पर वकालतके धन्धेके लिये लोगोंके मनमें बहुत आदर नहीं होता | समाजमें ऐसी छाप पड़ी होती है कि वकील पैसेके लिये 'झूठको सच और सचको झूठ' साबित करनेवाला होता है | लोग मानते हैं कि सत्यनिष्ठा और वकालत साथ साथ नहीं चल सकतीं; और अगर कोई वकील सच बोलनेका ही आग्रह रखे तो वह भूखों मरेगा | परन्तु जीवनके हर क्षेत्रमें सत्यका आग्रह रखनेवाले गांधीजीने लोगोंकी इस मान्यताको झूठ साबित कर दिया था | उन्होंने एक वकीलके नाते अपना जीवनकार्य आरंभ किया था और उस क्षेत्रमें भी सत्यका आग्रह रखकर सफलता प्राप्त की थी | पैसेके लिये वकालतमें भी सत्यके साथ कभी समझौता नहीं किया, फिर भी उन्होंने दक्षिण अफ्रीकामें खूब पैसा कमाया था |

वकालत करनेकी उनकी पद्धति निराली ही थी | कोई मुवक्किल उनके पास आता, तब उसका केस हाथमें लेनेके पहले व्यक्तिगत रूपमें केसका सच्चा ब्यौरा गांधीजी जान लेते थे | और उन सच्ची बातोंके आधार पर ही वे अपनी बहस तैयार करते थे | अपने मुवक्किलसे भी सच बुलवा कर उसे न्याय दिलाते थे | इस कारणसे न्यायाधीशोंके सामने भी उनकी सत्य-प्रियताकी प्रतिष्ठा जम गई थी | बादमें तो लोगोंमें गांधीजीकी ऐसी ख्याति फैल गई कि गांधीजी जो केस हाथमें लेते हैं, वह सच्चा ही होता है और उसमें मुवक्किलकी जीत निश्चित होती है |

एक बार ट्रान्सवालके जर्मिस्टन शहरमें एक सिक्खने अपने पड़ोसीका खून कर दिया | खून तो कर डाला, लेकिन अब सजासे कैसे बचा जाय ? सिक्खके मित्र उसे बचानेका प्रयत्न करने लगे | इन मित्रोंमें एक सिक्ख भी था, जो गांधीजीके आफिसमें कारकुनका काम करता था | उसने सोचा कि इस खून-केसमें अगर गांधीजीको वकील बनाया जा सके, तो उनकी सत्यनिष्ठाके जोर पर खूनी छूट सकता है | यह खून-केस हाथमें लेनेके लिये गांधीजीको समझाना बड़ा कठिन था, लेकिन हिम्मत करके उसने गांधीजीसे उस खूनीके वकील बननेकी प्रार्थना की | केस हाथमें लेनेके पहले उन्हेंने अपनी पद्धतिके मुताबिक केसकी जांच की | जब गांधीजीको यह विश्वास हो गया कि मुलजिमने खून किया है, तो उन्होंने उसका बचाव करनेसे इनकार कर दिया | एक हजार पौंडकी फीस देकर भी गांधीजीको यह केस लेनेके लिये ललचाया नहीं जा सका |

अन्तमें मुलजिमके मित्रोंने एक हजार पौंड देकर तीन बड़े मशहूर और होशियार वकीलोंके हाथमें यह केस दिया | केसमें जीतना बहुत ही कठिन था | फिर भी वकीलोंने अपने सारे दांव-पेंच लगाकर मुलजिमको खूनके इलजामसे छुड़ा दिया | इस छुटकारेसे वह खूनी सिक्ख फूलकर कुप्पा हो गया | दूसरे

ही दिन गांधीजीको ताना मारनेके लिये वह उनके आफिसमें गया और अैंठ दिखाकर गांधीजीसे कहने लगा : "क्या आप यह मानते थे कि आपके सिवा दूसरा कोई मुझे बचा ही नहीं सकता ? देखिये, आपके सामने ही मैं छूटकर आ गया या नहीं ?"

गुस्सेसे भरे हुए घमंडी सिक्खको गांधीजीने शांतिसे हंसते-हंसते कहा : "भाई, क्या आप जानते हैं कि आपको अपने छुटकारेके लिये कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है ?" उस सिक्खको लगा कि गांधीजी बदलेमें एक हजार पौंडकी फीसका ताना मार रहे हैं | लेकिन वह कोई जवाब दे उसके पहले ही गांधीजीने दूसरा वाक्य पूरा किया : "आपने सच्चाई और इमानदारीका खून किया है; यह आपने कोई मामूली कीमत चुकाई है ?" 'भले मेरे जैसे अनेक लोगोंका नाश हो जाय, लेकिन सत्यकी जय हो; अल्पात्माको नापनेके लिये सत्यका गज कभी छोटा न बने' – इस वचनमें श्रद्धा रखनेवाले और उस पर अमल करनेवाले गांधीजीकी दृष्टिमें सत्यका खून करके जीना बेकार था | इसलिये उन्होंने इस मामलेमें सहायता देनेसे इनकार कर दिया होगा |

गांधीजीके ऐसे जवाबसे वह सिक्ख शान्त हो गया और सत्य पर अडिग रहनेके उनके निश्चय-बलने सिक्खका हृदय जीत लिया |

पैसेके लोभसे दूर रहनेकी और सत्यनिष्ठाकी भावना वकालतके धन्धेमें आ जाय, तो लोग कितने सुखी हों और न्यायकी कैसी सच्ची प्रतिष्ठा समाजमें कायम हो जाय ?

१०

गाली देना भूल गया

गांधीजी गोलमेज कान्फरेन्समें शामिल होनेके लिये इंग्लैंड जा रहे थे | जहाज पर भी वे प्रार्थना, कताई वगैराका रोजका कार्यक्रम नियमित रूपसे चलाते थे | अंग्रेज बालक चरखेको अचंभेकी नजरसे देखते थे और गांधीजी कताई करते उस समय उनके आसपास आकर बैठ जाते थे | अपनी बालकों जैसी निर्दोषता और विनोदी स्वभावके कारण गांधीजी धीरे-धीरे उन बालकोंके मित्र बन गये | परन्तु कुछ अंग्रेज उन्हें अपने देशवासियोंकी रोटी छिननेवाला दुश्मन समझते थे | उनमें से एक गोरा तो गांधीजी जब जहाजके डेक पर घूम रहे होते, उस वक्त उन्हें गालियां भी सुनाता था | जिसे इस बातका भान न हो कि वह क्या बोल रहा है, उससे क्या कहा जाय ? सचमुच ऐसा आदमी दयाका पात्र है | धरती माताकी तरह क्षमाके अवतार गांधीजी हंसते-हंसते सारी गालियां पी जाते थे |

गांधीजी गुस्सा नहीं करते थे, इसलिये वह गोरा एक कदम आगे बढ़ा | उसने गांधीजीके बारेमें तानोंसे भरी एक कविता लिखी और लिखे हुए पन्ने गांधीजीको देकर यह देखनेके लिये उनके पास खड़ा रहा कि कविता पढ़ कर उन पर क्या असर होता है | गांधीजीने कविताके पन्नोंको फाड़कर कचरेकी टोकरीमें फेंक दिया | लेकिन उनमें लगी हुई पिन निकालकर सावधानीसे अपनी डिब्बीमें रख ली ! गांधीजीको चिढ़ानेकी अपनी कलाको बेकार जाते देख कर वह गोरा बोला :

“अरे गांधी, वह कविता पढ़ो तो सही | उसमें तुम्हारे लिये कुछ बढ़िया चीज है |”

गांधीजी (डिब्बीमें रखी हुई उस पिनकी ओर अंगुलीसे इशारा करके): “हां हां, जो बढ़िया चीज थी वह मैंने निकाल कर इस डिब्बीमें रख दी है |”

गांधीजीके इस विनोदभरे कटाक्षसे पासमें बैठे हुए उनके साथी और दूसरे गोरे हंस पड़े | महात्माकी फजीहत करनेकी कोशिशमें अपनी ही फजीहत हुई देख कर वह गोरा खिसिया गया | उस दिनसे वह गांधीजीको गाली देना भूल गया !

११

यह देह भगवानकी धरोहर है

गांधीजीने एक समय ये पवित्र वचन कहे थे कि अस्पृश्यता या छुआछूत हिन्दू धर्मका महान कलंक है | वह मिटना ही चाहिये; वरना वह हिन्दू धर्मका नाश कर देगा | अस्पृश्यता नाश करनेके लिये उन्होंने जीवनभर कार्य किया था और समय आने पर उस उत्तम कार्यके लिये अपने प्राणोंकी बाजी लगानेमें भी वे पीछे नहीं हटे | १९३३-३४ का साल तो उन्होंने इसी कामके लिये अलग रख दिया था और सारे देशमें दौरा किया था | जगह जगह लाखों आदमी उनका अहिंसा और प्रेमका सन्देश सुनने आते थे |

इस दौरेका नाम उन्होंने हरिजन-यात्रा रखा था | दौरा करते-करते वे आन्ध्र प्रान्तमें गये | वहां एक दिन एक बहुत बड़ी सभाके सामने वे भाषण कर रहे थे | लोगोंकी अपार भीड़ थी | भाषण पूरा हो जानेके बाद एक नौजवान सभाके मंचकी ओर तेजीसे बढ़ने लगा | खादीके कपड़ेमें लपेटी हुई किसी वस्तुको छातीसे चिपका कर वह भीड़में से राह निकाल रहा था | 'मुझे महात्माजीसे मिलना है', ये शब्द बोलते हुए वह बड़ी कठिनाईसे उस मंचकी ओर जा रहा था, जिस पर गांधीजी खड़े थे |

अरे, यह कौन घुसता चला आ रहा है ? क्या उसे गांधीजीके साथ किसी विषय पर चर्चा करनी है ? कोई सनातनी मालूम होता है ! पास आकर गांधीजी पर हमला तो नहीं करेगा ? ऐसे अनेक विचार पास बैठे हुए लोगोंके मनमें उठने लगे |

परन्तु उसके चेहरे पर गुस्सा नहीं था | वाद-विवाद करनेवालेका अन्धा जोश भी उसके मुंह पर दिखाई नहीं देता था | 'मुझे महात्माजीके पास जाने दीजिये' – इन शब्दोंमें उसके भीतरका भक्तिभाव ही प्रगट होता था |

गांधीजीके नजदीक आनेसे पहले जब उसे रोका गया, तो वह नम्रतासे कहने लगा : कृपा करके मुझे न रोकिये | मुझे महात्माजीको एक भेंट देनी है | मैं अपने हाथोंसे ही यह भेंट उन्हें देना चाहता हूं |"

स्वयंसेवक उसे गांधीजीके पास ले गये | गांधीजी मंच परसे ऊतरनेकी तैयारीमें ही थे, लेकिन उसे आता देख खड़े हो गये | उस नौजवानकी आंखोंमें आनन्दके आंसू चमक उठे | सफेद खादीके कपड़ेमें लपेटा हुआ गांधीजीका चित्र उसने बाहर निकाला | वह एक चित्रकार था | गांधीजीका चित्र बनाकर मेरी कूंची पावन हुई है, ऐसे भक्तिभावसे उसने अपना कलापूर्ण चित्र गांधीजीके चरणोंमें रखते हुए कहा:

"महात्माजी, यह मेरी कलाका नमूना है | मुझ गरीबकी यह नम्र भेंट स्वीकार कीजिये |" और गांधीजीके चरण छूकर वह एक तरफ खड़ा हो गया |

गांधीजीने चित्र हाथमें लिया | उसे खूब ध्यानसे देखा | उनके मुंह पर कलाकारकी कलाके लिये सन्तोषका भाव दिखाई दिया | परन्तु विनोद करते हुए वे बोले : "मैं इसे कहां ले जाऊं ? मेरा न घर है न बार, मैं इसे कहां लगाऊंगा ?"

चित्रकार भला क्या बोलता ? वह दोनों हाथ जोड़कर खड़ा रहा | विनोद करते करते गांधीजी थोड़े गंभीर हो गये | फिर कहने लगे : "यह सारा बोझ बढ़ाकर मैं क्या करूंगा ? मुझे तो लगता है कि इस देहका भी भार न हो तो कितना अच्छा ! इसलिये यह चित्र तुम अपने पास ही रखो |"

थोड़ी देरके लिये मंच पर शांति और गंभीरताकी भावना फैल गई | कोई मंच पर धीमे स्वरमें कह रहा था : 'बापू तो अब मुक्त आत्माकी तरह आचरण कर रहे हैं |' हरिजन-यात्राकी तेज आंधीमें भी गांधीजीको हमेशा यह भान रहता था कि ईश्वरकी सौंपी हुई यह देह एक पवित्र धरोहर है, ऐसा मानकर श्रेयार्थीको उसका उपयोग केवल जनसेवाके लिये ही करना चाहिये |

१२

थूकदानी या सकोरा

बिड़लाजीने दिल्लीसे पांचेक मील दूर चर्मालय और हरिजन विद्यार्थियोंके लिये एक छात्रालय बनवानेके लिये जमीन खरीदी थी | वह जमीन उन्होंने हरिजन-सेवक-संघको दान कर दी थी | बिड़लाजी चाहते थे कि उस जमीन पर पहले गांधीजी स्वयं एक रात रहकर उसका शुभ मुहूर्त करें | ऐसा तो हो ही नहीं सकता था कि हरिजन-सेवाका कोई नया कार्य शुरु हो और गांधीजीके आशीर्वाद उसे न मिलें | इसलिये गांधीजीने बिड़लाजीकी यह प्रार्थना मान ली |

यह बात तय हुई कि दूसरे मकान बांधनेका काम शुरु हो उसके पहले गांधीजीके लिये एक झोंपड़ी बनाई जाय और गांधीजी एक रात उसमें रहें | लेकिन झोंपड़ीकी कल्पना व्यवस्था करनेवालोंकी अलग थी और गांधीजीकी अलग थी | झोंपड़ी देखते ही गांधीजी बोल उठे : "यह झोंपड़ी है या महल ?" उस झोंपड़ीके लिये ढाई हजार रूपये खर्च किये गये थे | बिड़लाजीने हरिजन-सेवाका काम करनेवाले एक सेवकको यह काम सौंपा था, इसलिये गांधीजीने पहले उसीकी खबर ली :

"यह मकान तैयार कराते समय तुम यह भूल गये कि तुम हरिजनोंके प्रतिनिधि हो, और तुमने अपनेको बिड़लाका प्रतिनिधि मान लिया | कच्ची दीवालों पर घास-फूंसका छप्पर छाया होता, तो गरीबोंके झोंपड़ोंके साथ इसका कैसा ठीक मेल बैठता !"

सेवकने थोड़ा बचाव करनेका प्रयत्न किया | परन्तु उसकी दलील ग्रामजनताके मानसको समझनेवाले गांधीजीके गले भला कैसे उतरती ?

सारा दिन बीत गया | शामको गांधीजीका ध्यान पीतलकी उस थूकदानी पर गया, जो उनके लिये डेढ़ रूपयेमें खरीद कर लाई गयी थी | गांवके वातावरणमें वह थूकदानी गांधीजीको खटक रही थी | इसलिये ब्रजकृष्ण नामके एक सेवकको बुलाकर उन्होंने पूछा : "यह थूकदानी किसने मंगाई है और बाजारसे खरीद कर कौन लाया है ?"

ब्रिजकृष्ण – बापू, मैंने मंगवायी है | मैंने माना था कि मेरे घर पर होगी तो वहांसे ले आयेगा अथवा किसीके यहांसे मांग लायेगा | लेकिन खरीदनेवाले भाईने गलती की |

गांधीजी – तुम्हें ऐसा नहीं लगा कि थूकदानी कहीं न मिली, तो वह भाई खरीदकर भेज देगा ?

ब्रिजकृष्ण – लगा तो था, लेकिन मैंने माना था कि चार-पांच आनेकी खरीद कर भेजेगा |

गांधीजी – चार आनेकी आती तो तुम्हें कोई एतराज नहीं होता, यही न ? इसी तरह गांवोंकी सेवा होगी ? गांवमें मिट्टीका बड़ा सकोरा पैसे दो पैसेमें मिल जाता है, वह तुम मंगवा सकते थे | खैर, इसे वापिस करो और मिट्टीका बरतन मंगवाओ |

गांवोंका धन शहरोंकी ओर खिंचता जाता है और गांव दिन-ब-दिन गरीब और कंगाल बनते जा रहे हैं | गांधीजी ग्रामोद्योगोंको फिरसे जीवन-दान देकर धनके इस प्रवाहको रोकना चाहते थे | इस दृष्टिसे ग्रामसेवकको गांवकी ही बनी चीजें काममें लेनेका आग्रह रखना चाहिये | पैसेकी चीजके लिये ग्रामसेवक रूपया खर्च करे, तो उसकी सेवाका तेज मंद पड़ जाता है और सेवाके बदले लोगोंकी कुसेवा होती है | सकोरेकी जगह पीतलकी थूकदानी लानेवाले साथी ग्रामसेवाके मर्मको नहीं समझ सके, इसके लिये दुःख प्रगट करते हुए गांधीजीने कहा :

"मैं मानता था कि तुम लोग सहज ही इस चीजको समझ लोगे | अब अगर मुझसे पूछे बिना एक भी चीज आयी तो मुझे खाना छोड़ देना पड़ेगा |"

गांधीजीके इन शब्दोंमें दुःख और गंभीरता दोनों थे | उनके ये वचन सुनकर सब चकित हो गये | अब अधिक दलील या चर्चाकी गुंजाईश ही नहीं रह गयी थी | वे इस विचारसे घबरा गये कि 'हमारी गफलतके कारण कहीं बापू उपवास कर बैठे, तो हम दुनियाको क्या मुंह बतायेंगे ?'

रात हुई | सोनेकी तैयारी होने लगी | बरामदेमें गांधीजीके लिये एक खटिया लाई गयी | परन्तु गांधीजीने उस पर सोनेसे इनकार कर दिया |

"मुझे खटिया नहीं चाहिये | चटाई पर बिछी हुई गादी काफी होगी |"

गांधीजीने नीचे जमीन पर सोना पसन्द किया, इससे सब घबरा उठे | किसीने दबी जबानमें कहा :

"बापू, गरीबसे गरीब आदमी भी खटिया तो काममें लेता ही है |"

गांधीजीका पुण्यप्रकोप अभी शान्त नहीं हुआ था | वे बोले : "क्या मैं यह नहीं जानता ? परन्तु हम इस आसान बातमें ही गरीब गांववालोंकी बराबरी करेंगे ? बराबरी करनी हो तो गरीबोंके भोजन और कपड़ोंमें करो ! उनके जैसा खाओ और उनके जैसा पहनो | अगर हम चारपाई छोड़ सकें तो कहा जायगा कि हमने कुछ त्याग किया | वैसे पूरे ग्रामीण बननेमें तो हमारे अनेक जन्म बीत जायंगे |"

ऐसी थी गांधीजीकी ग्रामसेवाकी दृष्टि | वे बार बार कहते थे कि 'मेरा दिल गांवोंमें है |' कार्यकर्ताओंको उन्होंने गांवकी सेवाके लिये गांवमें ही बसनेका आदेश दिया था | परन्तु उनके दिलमें एक दुःख रहा करता था : "जब तक मैं स्वयं गांवमें जाकर नहीं बसता, तब तक मेरे इस कथनकी क्या कीमत है ?" और आखिरमें जब एक ऐसे पिछड़े हुए गांवमें जाकर वे बस गये, जहां न तो जानेका रास्ता था, न डाकघर था, न मलेरियाके लिये डाक्टर था, तभी उनके हृदयको शांति मिली |

१३

स्वच्छताका आग्रह

बिड़ला परिवारके साथ गांधीजीका बहुत गहरा सम्बन्ध था | दिल्लीमें वे हमेशा बिड़ला-भवनमें ही ठहरते थे | बिड़ला जैसे पूंजीपतिके यहां गांधीजीका ठहरना लोगोंके एक वर्गको पसन्द नहीं आता था | वह यह भी कहता था कि बिड़ला गांधीजीका नाजायज फायदा उठाते हैं | ऐसे लोगोंसे गांधीजी विनोदमें कहते थे : "मैं तो पक्का बनिया हूं | बिड़लाजी मुझे धोखा नहीं दे सकते |"

एक बार गांधीजी बिड़ला-भवनमें ठहरे थे | सवेरे वे नहानेकी तैयारीमें थे, लेकिन स्नानघरमें बिड़लाजी नहा रहे थे | वे नहाके बाहर आये, उसके बाद गांधीजी अन्दर गये | भीतर जाकर देखा तो बिड़लाजीकी गीली धोती पड़ी हुई थी | उसे एक ओर हटाकर नहानेके बजाय गांधीजीने खुद उसे धो डाला और बादमें नहाने बैठे | बिड़लाजीका नौकर धोती लेने आया, उसके पहले ही स्नानघरका दरवाजा बन्द हो गया था | गांधीजीने अपनी लंगोटी भी हाथसे ही धो डाली | ये दोनों कपड़े लेकर वे बाहर आये, और रस्सी पर सूखनेके लिये फैला रहे थे कि तेजीसे बिड़लाजी आ पहुंचे |

"बापूजी, बापूजी ! यह आप क्या कर रहे हैं ?" कह कर गांधीजीके हाथसे वे अपनी धोती खींचने लगे | इस घटनासे उन्हें बड़ा दुःख हुआ |

धोती फैलाते-फैलाते गांधीजी बोले : "धोती मैंने धो डाली तो इसमें बिगड़ क्या गया ? भीतर पड़ी हुई थी | उस पर किसीके मैले पैर पड़ते, इसके बजाय मैंने धोकर साफ कर ली; यह अच्छा ही हुआ न?"

"बापूजी ..." बिड़लाजी गिड़गिड़ाये | गांधीजी जैसे महापुरुषने मेरी धोती धो डाली, यह सोचकर बिड़लाजीको बड़ा खेद हुआ, और स्नानघर तुरन्त साफ न करानेकी लापरवाहीके लिये बड़ा पछतावा होने लगा | उन्हें समझ नहीं पड़ा कि क्या कहा जाय | कुछ क्षण बाद वे बोले : "बापू, आप पर कामका इतना बड़ा बोझ है | आपने मेरी धोती क्यों धो डाली ?"

गांधीजी – जीवनमें स्वच्छता और सफाईके कामसे बड़ा और कौनसा काम है ?

बिड़लाजी भला क्या बोलते ?

वे जानते थे कि स्वच्छताके लिये गांधीजी अत्यन्त दृढ़ आग्रह रखते हैं | परन्तु स्वच्छताके इतने ऊंचे आग्रहका अनुभव तो उन्हें इस मौके पर ही हुआ |